धर्मशास्त्र परिभाषित किया जाय

धर्मशास्त्र परिभाषित किया जाय

महोदय!

वर्तमान समय में देश की सम्पूर्ण समस्याओं के मूल में यत्र-तत्र कहीं न कहीं धर्म विद्यमान है। धार्मिक भ्रान्ति ने पूरे भारत की अन्तरात्मा को झकझोर दिया है। सड़कें टेढ़ी कर दीं, कहीं ईंट सजाकर मन्दिर बना दिया, मजार खड़ी कर दी। कानून धर्म के नाम पर आत्म-समर्पण कर देता है कि यह तो धर्म है। धर्म के नाम पर अतिक्रमण, आतंकवाद तथा निर्मम हत्याएँ हो रही हैं। अलग राष्ट्र की माँगें भी दुहरायी जाती हैं। देश के विकास में प्राणप्रण से लगे त्यागी और देशप्रेमी नेताओं के प्रयास भी इन धार्मिक भ्रान्तियों के चलते अस्त-व्यस्त होते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में क्यों न इस धर्म के प्रश्न को सुलझा लिया जाय।

भारत के वैदिक ऋषि-मुनियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम से भी हजारों वर्ष पूर्व अपने कठोर तपश्चर्या से अनवरत प्रयास के फलस्वरूप एक परमात्मा को प्रत्यक्ष किया और पूरे भारत की वनस्थलियों में आश्रम बनाकर शिष्य-परम्परा में हृदयंगम कराते हुए संजोकर रखा। वही सत्य आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में भली प्रकार दृढ़ाया। उन्होंने कहा कि एक आत्मा ही सत्य है, अन्य जो कुछ भी है वह नश्वर, अस्तित्वविहीन है। यह सन्देश उन्होंने मानव मात्र को सम्बोधित कर कहा। विश्व के परवर्ती महापुरुषों ने इसे ज्यों का त्यों अपनाया तथा देशज और क्षेत्रीय भाषाओं में प्रस्तुत किया। अहुरमज्दा, गॉड, अल्लाह इत्यादि विविध नामों से पुकारा, जो एक ही परमात्मा का बोध कराते हैं। अतः गीता विश्व के समस्त धर्माचार्यों की धर्मजननी है। भारत विश्वगुरु है और वे सब आपके अनुयायी ही हैं। जैन साहित्य, बौद्ध वाङ्मय, ग्रन्थ साहब, रामचरितमानस तथा अन्य सन्तों की वाणियाँ गीता का ही अनुवर्तन हैं।

धर्म एक है। उस एक परमात्मा की प्राप्ति की क्रिया धर्म है। अतः धर्मनिरपेक्षता का नारा लगाने वाले पूर्णतः भ्रमित हैं; क्योंकि एक से अधिक धर्म होने पर ही पक्ष और विपक्ष का प्रश्न उठना चाहिए।

पहले सभी शास्त्र मौखिक थे, शिष्य-परम्परा में कण्ठस्थ कराये जाते थे। पुस्तक के रूप में नहीं थे। आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व वेदव्यास ने उसे लिपिबद्ध किया। चार वेद, महाभारत, भागवत, गीता

इत्यादि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संकलन उन्हीं की कृति है। भौतिकएवं आध्यात्मिकज्ञानकोउन्होंने ही लिखा किन्तु उन्हेंशास्त्रनहींकहा।उन्होंनेवेद को शास्त्रनहींकहा,अन्यकिसी ग्रन्थ को उन्होंने शास्त्र की संज्ञानहींदी;किन्तु गीता कीअनुशंसा में उन्होंने कहा, 'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।' गीता भली प्रकार मनन करके हृदय में धारण करने योग्य है जो भगवान् पद्मनाभ के श्रीमुख से निःसृत वाणी है, तब अन्य शास्त्रों केविषयमेंसोचने या उनके संग्रह कीक्या आवश्यकता है? अतःगीता आपका धर्मशास्त्र है। भारत का सम्पूर्ण अध्यात्म और आत्मस्थिति दिलाने वाला साधन-क्रम इस गीता में स्पष्ट वर्णितहै।

गीता लोकशास्त्र है। यह जब प्रकाश में आयी थी, तबधर्मकेनामपरप्रचलितआजकेमज़हबों औरसम्प्रदायोंकाकहींनामोनिशान नहींथा।उस युग के सामाजिक, धार्मिकउथल-पुथल को गीता ने ही शान्ति प्रदान की। इसमें वर्णित अर्जुन के प्रश्न-परिप्रश्न हर मानव के हैं। अतःगीता सबके लिए शाश्वत संहिता है, आपके पूर्व ऋषियों की धरोहर है, आर्य-शास्त्र है, सनातन धर्म का मूलदर्शन है। यहसत्यहजारों वर्षों में किंचित् भी परिवर्तितनहींहुआ और न भविष्य में होगा। हर्ष काविषयहैकिइसशताब्दीकेअन्तिममहाकुम्भ पर्व हरिद्वार में एकत्र धर्माचार्यों ने एकमत होकर स्वीकार किया कि श्रीमद्भगवद्गीता ही सबका धर्मशास्त्र है, जिसकी बोधगम्य परिभाषा 'यथार्थ गीता' है। इसे धर्मशास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित किया जाय।

गीता मानव-दर्शनहै,जोमानवके अन्तर्मन में प्रसुप्त दुःख के कारणों को मिटाकरअसीमसुख का स्थान देती है। यह मनुष्य मात्र को सम्बोधित करकेकहीगयीहैकिसुखरहितक्षणभंगुर किन्तु दुर्लभ मानव-तन को पाकर मेरी शरण आ।अतः शान्ति चाहनेवाले मानव मात्र का धर्मशास्त्र यहीगीताहै।

गीताएकता, बन्धुत्व और राष्ट्रीयता का शास्त्र है जिसमें सबका ईश्वर एक, उसे पाने की क्रिया एक, पथ में अनुकम्पा एक तथा सबके लिए परिणाम एक है-वह है प्रभु का दर्शन, अमृतमय अक्षय पद और सदा रहनेवाला अनन्त जीवन। यदि भारत को अथवाविश्वको ही एकता के सूत्र मेंसंगठितदेखनाचाहतेहैंतोएकसर्वमान्यशास्त्र मानव मात्र के हाथों में पहुँचायें। धर्मशास्त्र के रूप में इसे मान्यता मिलते ही मानव समाज आश्वस्त हो जायेगा। भारतवासियों को फिर कोई मुसलमान या ईसाई नहीं बना सकेगा। कोई भी उनका धर्मान्तरण नहीं कर सकेगा। क्योंकि धर्म सबका एक ही है तो अंतरण कैसा? झोपड़ी से महलों तक लोग एक-दूसरे को एक ईश्वर की संतानकेरूपमेंदेखनेलगेंगे।

गीता केवल हिन्दुओं का धर्मशास्त्र कदापिनहीं है; क्योंकि मनुष्य मनुष्य में दरार डालने वाली संकीर्णताओं से गीता मुक्त है। सामाजिक व्यवस्थाकारगर्हितजाति-व्यवस्था कोभगवान्की बनाई हुई कहते हैं, किन्तु 'यथार्थ गीता' का अनुशीलन उनके लिए चुनौतीहैकिगीताकाएक भीश्लोकमनुष्योंमें बँटवारानहीं करता। भगवान् श्रीकृष्ण के अनुसार, सभी मनुष्य परमात्मा के विशुद्धअंशहैं।ऐसीस्पष्ट घोषणा केहोतेहुएभी

भारत में अस्पृश्यता, ऊँच-नीच, हीन, चाण्डाल जैसी वर्गभेद की धारणाएँ प्रचलन में हैं। इन बहुसंख्यकों के मुख पर अनुसूचित, जनजाति, आदिवासी, दलित जैसी कालिख पोतकर उन्हें आरक्षण देना मानवता का अपमान तथा मानव-मानव में भेद बनाये रखने का घिनौना तरीका है। आरक्षण अवश्य दें किन्तु सैकड़ों पीढ़ियों से जिनकी झोपड़ियों का रिसाव आप नहीं रोक सके उन्हें दें। यदि इनकी कालिमा को सदा-सदा के लिए साफ करके निर्मल परमात्मा के अंश के रूप में इनको देखना है, प्रतिदिन बहने वाले इनके आँसुओं को पोंछकर हीन भावना से त्राण दिलाकर समानता के धरातल पर इन्हें पुनर्प्रतिष्ठित करना है, तो परस्पर भ्रातृत्व का जीवन-दर्शन इन्हें दें।

गीता विश्व का धर्मशास्त्र है। सौभाग्य से इसका प्रस्फुटन भारत में हुआ इसलिए भारतीयों का गुरुत्व की महिमा से मण्डित करने वाला, किन्तु सबका अपना धर्मशास्त्र है। जिस दिन से गीता को राष्ट्रीय स्तर पर धर्मशास्त्र की मान्यता मिल जायेगी उस दिन से भारत की धार्मिक फूट सदा के लिए तिरोहित हो जायेगी, विश्व को एक धर्मशास्त्र मिल जायेगा, साम्प्रदायिक दंगों की जगह नहीं रह जायेगी, एकता के लिए विभिन्न आयोजनों के आडम्बरों पर खर्च होने वाले अरबों-खरबों रुपये बच जायेंगे, आत्मीयता लहलहा उठेगी, विश्व में कहीं भी भारतीय चैन की सांस ले सकेगा। अपने ही देश में अल्पसंख्यक और अपमानित हो रहे सवर्णों के मस्तक से कलंक का टीका मिट जायेगा। अतः गीता को मान देकर, उसे सबको सुलभ कराकर धर्मध्वजावाही भारत को पुनः विश्वगुरु की गरिमा दिलाने में सत्प्रयास के भागी बनें। काल के कपाल पर अमिट लेख लिखने की गौरवशाली परम्परा को आगे बढ़ाते हुए आप भी ऐसा कुछ काम करें जिससे संसार युगपुरुष के रूप में आपको सदैव याद रखे।

नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियाँ कितनी ही सारहीन क्यों न हों, उसकी यह वाणी विचारणीय है कि युद्धों की विभीषिका एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट की त्रासदी में भारत ही धर्म की परिभाषा देगा, जिससे विश्व में शांति की लहर छा जायेगी। सौभाग्य से धर्माचार्यों ने धर्मशास्त्र एवं उसकी परिभाषा का उद्घोष कर दिया है इसलिए 'यथार्थ गीता' की कम से कम तीन आवृत्ति विद्वानों से करायें और सबसे अनुशंसित होने पर इसे धर्म की सार्वभौम व्याख्या के रूप में जन-जन तक पहुँचाएँ।